दिनांक :- 28-04-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)
स्नातक :- प्रथम खंड इतिहास
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
इकाई :- चतुर्थ
पत्र :- एक
अध्याय :- ऋग्वैदिक काल स्त्रोत

मृत्यु की उपरांत के विषय में ऋग्वेद की ऋचाओ में कुछ दृढ़ विश्वास नहीं है।

वैदिक देवताओ में किसी प्रकार की ऊँच-नीच का भेद नहीं था और वैदिक ऋषियों ने प्रसंगवश सभी देवताओ की महिमा गाई है। सबसे प्रचीन देवता द्यौस थे तत्पश्चात पृथ्वी का स्थान था। दोनों द्यावा-पृथ्वी के नाम से जाने जाते थे।

ऋग्वेद मे कुल देवताओ की संख्या 33 बताई गई है। इनमे इन्द्र, अग्नि, वरुण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। ऋग्वैदिक काल के सबसे महत्वपूर्ण देवता इंद्र है जो

Scanned with CamScanner

युद्ध एवं वर्षा के देवता हैं। इंद्र के दो नाम हैं - इंद्र ने तीनन के रूप में आर्य कबीले का नेतृत्व किया और अनार्यों को पराजित किया। इस रूप में वे पुरंदर कहे जाते हैं। इन्द्र 'पुलुवि' के रूप में उन्होंने वृत राक्षस की हत्या की तथा उससे जल (आप) को मुक्त करवाया।

वृत संभवतः अनावृष्टि का असुर था।

इन्द्र के लिए ऋग्वेद में सर्वाधिक 250 सूक्त समर्पित हैं। उन्होंने वृत का वध करके जल को मुक्त किया तथा आकाश, सूर्य एवं ऊषा को भी जन्म दिया। जल को मुक्त कराने की वजह से इन्द्र को उसे पुरभिद भी कहा जाता है। इन्द्र के लिये एक और विशेषण अप्सुजीत (पानी को जीतने वाला) भी आता है। द्यौस को इन्द्र का पिता अग्नि को भाई तथा मारूत को सहयोगी माना गया है। विष्णु को वृत वध में इंद्र की सहायता करते

दिखाया गया है। इन्द्र का प्रिय आयुध वज्र था।

अग्नि:- ऋग्वेद में अग्नि दूसरे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देवता थे। यह यज्ञ एवं गृह के देवता थे। वे पुरोहितों को भी देवता थे। तथा देवता एवं मानव के बीच मध्यस्थ थे। इनके लिये ऋग्वेद में 200 सूक्त अर्पित किये गये हैं। कई स्थानों पर अग्नि को द्यौस और पृथ्वी का पुत्र बताया गया है। वही पृथ्वी पर अग्नि, अंतरिक्ष में तड़ित तथा आकाश में सूर्य के रूप में दिखाया गया है किंतु मातरिश्विन (देवता) उसे पृथ्वी पर लाया। पृथ्वी पर यज्ञ वेदी में अग्नि की स्थापना भृगुओं तथा अंगिरसों ने की। इन्हें इस कार्य के लिये अथर्वन कहा गया है। अग्नि के बारे में माना गया है कि वह दुर्ग का भेदन करती है। चूंकि यह प्रत्येक घर में प्रज्वलित होती है। अतः इसे प्रत्येक घर की अतिथि भी माना गया है। इसे पथ प्रदर्शक

Scanned with CamScanner

भी कहा गया है।

वरुण :- तीसरे महत्वपूर्ण देवता वरुण थे। इनकी स्तुति 30 सूक्तों में की गई है। वे जल देवता है। उन्हें असुर तथा राजा भी कहा गया है। वरुण की चर्चा बोगाजकोई अभिलेख मे भी मिलती है।

वरुण एक पवित्र देवता थे। जो केवल यज्ञ एवं बलि से ही संतुष्ट होते थे। उनकी कृपा प्राप्त करने के लिये पवित्र होना भी आवश्यक था। वे नैतिक संहिताओं (ऋत) तथा ऋतु (मौसम) के भी संरक्षक थे। इन्हे अर्थों मे उन्हें ऋतस्यगोपा कहा जाता है। वरुण ईरान मे अहुरमज्द तथा युनान में ओरनोज नाम से प्रतिष्ठित था। वरुण के साथ मित्र का भी नाम है और दोनो मिलकर मित्रावरुण कहलाते है। मित्र के अतिरिक्त वरुण के साथ आप (जल) का भी उल्लेख किया गया है तथा माना गया है कि

उसी की रहस्यमयी शक्तियों की वजह से नदियों में

जल प्रवाहित होता था तथा जल सागर में गिरने पर भी वह भरता नहीं है।

सोम :- ऋग्वेद के नौवें मंडल में सभी 114 सूक्तों में

सोम की स्तुति की गई है। सोम का मूल निवास स्थान स्वर्ग

में था। सोम के पौधे मूंजवंत पर्वत व गौरी नदी के तट पर

पाये जाते थे। सोमरस को अन्धस्, रस, पितु, पीयुष तथा

अमृत कहा गया है। उसे औषधि तथा वनस्पति का स्वामी

माना गया है। परवर्ती वैदिक ग्रंथों में सोम की तुलना चंद्र

मा से भी की गई है। इसकी तुलना ईरान में होम देवता तथा

यूनान में दिआनासिस से की गई है।

मित्र :- ये वरुण से संबंधित देवता थे। इन्हें शपथ एवं प्रतिज्ञा

का देवता भी माना गया है।

यम :- मृत्यु के देवता

अश्विन (नासत्य) है। ये दुर्घटनाग्रस्त नाव के यात्रियों

Scanned with CamScanner

की रक्षा करते थे! अपंग व्यक्ति को कृत्रिम पैर प्रदान करते थे तथा चिकित्सा के देवता थे! ये युवतियों के लिये वर की तलाश भी करते थे!

विष्णु :- ये कुछ हद तक यज्ञ से संबद्ध थे। ये तीन कदम के देवता भी थे!

रूद्र :- ये अनैतिक आचरणों से संबद्ध माने जाते हैं! वे चिकित्सा (औषध) के संरक्षक थे!

पूषण :- यह सूर्य से संबंद्ध देवता थे। ये सड़क पशु पालक एवं चारागाह के देवता थे! ऋग्वेद में इसके अलावा कुछ अर्द्ध देवता भी थे यथा विश्वदेव, आर्यमन (विवाह से संबंधित) ऋभु (बौना) ये धातुकारी से संबंधित देवता थे; गंधर्व अप्सरा (जैसे कि ऋग्वेद में उर्वशी की चर्चा) ऋग्वेद में कुछ देवियों की भी चर्चा है यथा उषा, अदिति, निशा (रात्रि), अरण्यानी (जंगल से संबंधित देवी) सरस्वती तथा पृथ्वी

ऋग्वेद में दो जैन तीर्थंकर जिन तथा अरिष्टनेमि के नाम मिलते है।

ऋग्वेद में ही ॐ भूर्भुवः स्वः नाम से प्रसिद्ध गायत्री मंत्र संबद्ध है। इसमे देवी सविता की उपासना की गई है

ऋग्वेद मे ब्रह्म का अर्थ यज्ञ से है तथा आत्मन का अर्थ प्राण वायु से है।

प्रसिद्ध विद्वान यास्क ने देवताओं के तीन वर्ग निर्धारित किये है

(1) आकाश लोक से संबंधित देवता - द्यौस, वरुण, मित्र, सूर्य अश्विन (नासत्य), उरुक्रम, पूषण, सावित्री, विष्णु, ऊषा

(2) वायु लोक - मारुत, वायु, वात, रुद्र, पार्जन्य, इन्द्र, अहिर्बुध्न्य

(3) भू-लोक (पृथ्वीलोक) - सोम, अग्नि, पृथ्वी, सरस्वती

(4) अंतर्गति के देवता - सरस्वती (विद्या) (बुद्धि) वाक्, श्रद्धा, मन्यु

ऋग्वैदिक दर्शन - ऋग्वेद मे अग्नि के संदर्भ में कहा गया है कि अग्नि के एक नाम है अथवा अनेक नाम हैं इन प्रश्नों में हमें एकेश्वरवाद की झलक मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि ऋग्वैदिक काल के स्त्रोत है

Scanned with CamScanner